

## APPENDIX V

CHART OF METRES AND FIGURES IN VERSES OF THE TEXT

The Chart of metres and figures is mainly based on Kedarabhatta's Vṛttartnākar and Mammata's Kavyaprakāśa respectively. Saṃkara and Saṃsr̥ṣṭi are not noted as such but individual figures in the verse are shown separately.

## APPENDIX V

CHART OF METRES AND FIGURES IN VERSES OF THE TEXT

|   |             |            |           |
|---|-------------|------------|-----------|
| १ | विश्वाभिधै  | वसन्ततिलका | रूपक      |
|   | देवस्य      | "          | उपमा      |
|   | दीपः        | "          | रूपक      |
|   | अधेरिशा     | "          | रूपक      |
|   | ते यान्ति   | "          | —         |
|   | रातां सभासु | "          | —         |
| २ | देवः        | "          | —         |
|   | यद्यप्यसौ   | "          | रूपक      |
|   | लक्ष्मीभुजा | "          | रूपक      |
|   | श्रीविक्रमो | "          | विरोधाभास |
|   | हलै गते     | "          | —         |
|   | श्रीहर्ष    | "          | श्लेष     |
|   | सृष्टं      | "          | —         |
| ३ | देव्या      | "          | —         |
|   | योऽप्यस्ति  | "          | उपमा      |

|    |                  |                  |                        |
|----|------------------|------------------|------------------------|
|    | ये नाम्न         | वसन्ततिलका       | श्लेष                  |
|    | बाणस्य           | "                | समाशोक्ति              |
|    | मूढेन            | "                | —                      |
|    | तदिम             | गीति             | —                      |
|    | सा जयति          | आर्घ्य           | उपमा                   |
| ४  | अस्योद्यद्       | स्रग्धरा         | उत्प्रेक्षा            |
|    | यस्मिन्नुचलिते   | शादूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा - अनुप्रास |
| ५  | कर्णे            | आर्घ्य           | श्लेष                  |
|    | पूर्वापरयोः      | आर्घ्य           | श्लेष                  |
| ६  | श्रीः स्वयं      | अनुष्टुप्        | उपमा                   |
|    | लक्ष्मी पारवत्या | आर्घ्य           | रूपक                   |
|    | निलूनि.          | शादूलविक्रीडितम् | उपमा - सहोक्ति         |
|    | ताभासाद्य        | "                | पर्यायोक्ति            |
| ७  | देव त्वत्पद      | "                | —                      |
| ८  | उपायस्योल्लेख.   | शिरनरिणी         | दृष्टान्त              |
| ११ | वंशस्य           | वसन्ततिलका       | —                      |

|                  |                 |                  |               |
|------------------|-----------------|------------------|---------------|
| १२               | तृतीय.          | अनुष्टुप्        | —             |
| १३               | एकैकाशः         | आर्या            | —             |
|                  | प्रुत्तकवृत्तैः | आर्या            | प्रतिवस्तूपमा |
| १४               | वागीश्वरि       | अनुष्टुप्        | रूपक          |
|                  | जयन्ति          | अनुष्टुप्        | —             |
| १६               | देवि ब्राह्मि   | अनुष्टुप्        | रूपक          |
|                  | जयन्ति          | अनुष्टुप्        | उत्प्रेक्षा   |
| १७               | नीचजाति.        | अनुष्टुप्        | विरोधाभास     |
|                  | सूनागृह.        | अनुष्टुप्        | उपमा          |
|                  | नो जीविकेय      | वसन्ततिलका       | दृष्टान्त     |
|                  | कुर्वतः         | अनुष्टुप्        | श्लेष         |
|                  | तापमुत्सारयन्   | अनुष्टुप्        | उपमा          |
| १८               | स काञ्चि        | मालिनी           | —             |
| द्वितीयोच्छ्वासः |                 |                  |               |
| २१               | लीलामण्डप.      | शादूलनिक्रीडितम् | अपलुति        |
|                  | विलसदमल.        | मालिनी           | उपमा          |

|    |                 |                  |                    |
|----|-----------------|------------------|--------------------|
| 22 | यत्राऽऽयान्ति   | शादूलविक्रीडितम् | अपह्नुति           |
| 23 | दिग्धात्रा.     | साधरा            | उत्प्रेक्षा        |
|    | श्यामा          | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा        |
|    | वक्षसि          | आर्या            | —                  |
| 24 | ग्रीष्मस्तीव्र. | शादूलविक्रीडितम् | पर्याय             |
| 25 | यः शीतलैः       | वसन्ततिलका       | उपमा               |
|    | स एव            | अनुष्टुप्        | अतिशयोक्ति         |
| 26 | संलीना.         | शादूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा        |
|    | अतिवर्ति        | आर्या            | उपमा               |
| 27 | मूले.           | शादूलविक्रीडितम् | —                  |
| 28 | वापीषु          | शादूलविक्रीडितम् | निदर्शना           |
|    | अहो             | अनुष्टुप्        | —                  |
| 29 | देवी भानुमतः    | शादूलविक्रीडितम् | उपमा-उत्प्रेक्षा   |
|    | या महासिन्धु    | अनुष्टुप्        | विभावना-विशेषोक्ति |
| 30 | एकेन क्षियमाण   | आर्या            | अघ्निरन्यास        |
|    | जीवित.          | आर्या            | अनुप्रास           |

|               |                   |                  |              |
|---------------|-------------------|------------------|--------------|
|               | कूरामाल्य.        | शादूलविक्रीडितम् | उपमा         |
| ३६            | वृत्तिः संप्रति   | शादूलविक्रीडितम् | व्याजस्तुतिः |
| ३८            | आत्मा शुभाशुभ.    | वसन्ततिलका       | समाशोक्ति    |
| ३९            | निर्वर्त्यारिबल   | शादूलविक्रीडितम् | —            |
| ४०            | मनुजपति.          | मालिनी           | —            |
| तृतीयोच्छवासक |                   |                  |              |
| ४१            | कुर्वन्नुद्गत     | शादूलविक्रीडितम् | रूपक         |
|               | देवा क्षत्रियः    | "                | अपस्तुति     |
|               | वर्षास्वद्य       | "                | अतिशयोक्ति   |
|               | स्वामिन्नावेक्ष्य | वसन्ततिलका       | रूपक         |
| ४२            | निर्वरिणी         | वसन्ततिलका       | —            |
|               | कुम्भैरुद्धार.    | शादूलविक्रीडितम् | समाशोक्ति    |
| ४३            | वागं कुम्भट्टे    | "                | स्वभावोक्ति  |
| ४४            | चापे निवेशित.     | वसन्ततिलका       | अपस्तुति     |
|               | शराकस्य           | अनुष्टुप्        | उत्प्रेक्षा  |
|               | उड्डीयमानः        | उपजाति           | निदर्शना     |

|                    |                  |                    |                                     |
|--------------------|------------------|--------------------|-------------------------------------|
|                    | शारङ्गामृगीण     | वसन्ततिलका         | काव्यलिङ्ग                          |
|                    | विमुच्य          | उपजाति             | अपह्नुति                            |
|                    | महिषाः           | अनुष्टुप्          | उत्प्रेक्षा                         |
| ४५                 | पूत्कारेण        | शार्दूलविक्रीडितम् | —                                   |
|                    | यदकांशु          | शिरवरिणी           | भ्रान्तिमान् - दीपक                 |
|                    | स्वेदाम्भः       | शार्दूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा                         |
| ४८                 | हे चन्द्रोपल     | ॥                  | उपमा - काव्यलिङ्ग                   |
| ५१                 | ये दानोद्धर      | ॥                  | अपह्नुति                            |
|                    | त्वत्स्वङ्गाघातः | सुगंधरा            | रूपक                                |
| ५३                 | मृङ्गारस्य       | शार्दूलविक्रीडितम् | रूपक                                |
|                    | सत्यं पटो        | वसन्ततिलका         | उत्प्रेक्षा                         |
| ५४                 | विमलमणिः         | मालिनी             | —                                   |
| चतुर्थोद्दिष्टमासक |                  |                    |                                     |
| ५५                 | यत्राच्छुस्फटिक  | शार्दूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा                         |
|                    | यस्य क्षीरः      | ॥                  | रूपक                                |
|                    | गृध्राब्धिकारः   | अनुष्टुप्          | समासोक्तिः<br>विभावना - विशेषोक्तिः |

|                |                |                  |                   |
|----------------|----------------|------------------|-------------------|
| ५६             | गार्जत्येव     | शादूलविक्रीडितम् | उपमा              |
| ५८             | त्वं विक्रमेण  | वसन्ततिलका       | —                 |
| ५९             | या रेवेति      | शादूलविक्रीडितम् | अपह्नुति          |
|                | या शास्वत.     | अनुष्टुप्        | उत्प्रेक्षा       |
| ६१             | स्वामिन्धार्ये | सुगंधरा          | अनुप्रास          |
|                | धृत्यावेशः     | सुगंधरा          | अनुप्रास          |
| ६२             | दंष्ट्रयोः     | अनुष्टुप्        | व्यतिरेक          |
|                | त्रैलोक्यश्री  | अनुष्टुप्        | रूपक              |
| ६५             | देवः पातु      | शादूलविक्रीडितम् | —                 |
| ६८             | यस्याः द्विः   | ॥                | रूपकः उत्प्रेक्षा |
|                | निमिषां        | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा       |
| ६९             | गान्गाणि       | अनुष्टुप्        | उपमा              |
| ७१             | सन्ध्योन्मेषः  | आर्या            | श्लेषः दीपक       |
| ७२             | अथ भुवनः       | मालिनी           | उपमा              |
| पञ्चमोच्छ्वासक |                |                  |                   |
|                | यन्त्रालोकः    | शादूलविक्रीडितम् | —                 |

|    |                  |                    |                      |
|----|------------------|--------------------|----------------------|
|    | निभृत-चरण.       | हरिणी              | —                    |
| १३ | अन्धत्व.         | अनुष्टुप्          | उत्प्रेक्षा          |
|    | ध्वान्तौक.       | वसन्ततिलका         | अपलुति - उत्प्रेक्षा |
|    | पदं कृत्वा       | अनुष्टुप्          | उपमा                 |
|    | चान्द्रं न हो    | उपजाति             | रूपक - उपमा          |
|    | धामप्रि.         | रथोद्धता           | उत्प्रेक्षा          |
|    | प्राप्य          | रथोद्धता           | उपमा                 |
| १४ | गन्धः            | उपजाति             | उपमा                 |
|    | ज्योत्स्ना.      | वसन्ततिलका         | अधन्तिरन्यास         |
|    | अम्भः कणाग्रः    | वसन्ततिलका         | उत्प्रेक्षा          |
|    | कमलिनी           | द्रुतजिलम्बितम्    | उपमा - अपलुति        |
| १९ | एनां तव          | वसन्ततिलका         | —                    |
| १८ | उदञ्चद्विस्तानां | शिरवरीणी           | चित्रम               |
| २० | कालस्यासन.       | शार्दूलविक्रीडितम् | रूपक                 |
| २१ | नेषा हन्त        | ॥                  | —                    |
|    | सर्वत्राङ्गेषु   | सुगंधरा            | उपमा                 |

|              |                    |                  |                  |
|--------------|--------------------|------------------|------------------|
| ८२           | वह्नेस्तवास्य.     | वसन्ततिलका       | रूपक             |
| ८४           | धाम्ना             | शादूलविक्रीडितम् | उपमा             |
|              | योऽभृन्निसर्ग.     | आर्या            | उपमा - विरोध     |
| ८६           | योऽहं.             | शादूलविक्रीडितम् | —                |
| ८८           | बल्ललपरा.          | आर्या            | उपमा             |
|              | एषाऽनुमार्ग.       | वसन्ततिलका       | उपमा             |
| ९०           | प्रेतीभिः.         | शादूलविक्रीडितम् | उपमा             |
|              | मौलो.              | स्रग्धरा         | रूपक             |
|              | दोदण्डोत्क्षेप.    | स्रग्धरा         | —                |
| ९१           | एकं नक्षान्तरे     | स्रग्धरा         | स्वभावोक्ति-रूपक |
| ९२           | विद्युत्पुञ्जोग्र. | स्रग्धरा         | उपमा             |
|              | तस्मिन्मध्य.       | शादूलविक्रीडितम् | —                |
|              | नृपतिरथ            | मालिनी           | —                |
| ज्योत्स्नासक |                    |                  |                  |
| ९४           | नाना पया           | वसन्ततिलका       | अतिशयोक्ति       |

|     |              |                  |                      |
|-----|--------------|------------------|----------------------|
|     | दृष्टं यन्न  | शादूलविक्रीडितम् | —                    |
|     | किं तस्य     | शादूलविक्रीडितम् | भ्रान्तिमान्- अपलुति |
| ८६  | यस्मिन्नुरोज | वसन्ततिलका       | रूपक- उत्प्रेक्षा    |
|     | अपला-        | अनुष्टुप्        | उपमा                 |
|     | लावण्याम्बु- | शादूलविक्रीडितम् | रूपक- अपलुति         |
| ८८  | मजस्तरियं    | उपजाति           | उत्प्रेक्षा          |
|     | तदृष्टिः     | उपजाति           | उपमा                 |
| १०१ | अनङ्गसन्ताप- | वंशस्थ           | अपलुति               |
|     | तस्या-       | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा- अपलुति  |
|     | लावण्यावारि  | वसन्ततिलका       | रूपक- उत्प्रेक्षा    |
| १०२ | प्रकारेणारा  | अनुष्टुप्        | —                    |
| १०३ | भूमिः        | शादूलविक्रीडितम् | रूपक                 |
| १०६ | किं वक्त्र-  | शादूलविक्रीडितम् | ससन्देह              |
|     | सा नृजग      | वसन्ततिलका       | ससन्देह              |
| १०७ | अवाचमान-     | अनुष्टुप्        | उपमा                 |
|     | नादत्ते      | अनुष्टुप्        | उपमा                 |

|     |               |                  |              |
|-----|---------------|------------------|--------------|
| ११० | कावल्या       | वसन्ततिलका       | उपमा         |
|     | प्राभैभीतिः   | शाईलबिक्रीडितम्  | —            |
| १११ | हा स्वर्गध    | ॥                | —            |
|     | सौवित्तो भैः  | अनुष्टुप्        | आश्चर्यतरङ्ग |
| ११३ | रातेति        | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा  |
|     | चलति          | प्रातेनी         | उपमा         |
|     |               | सप्तमोद्धृताश्लक |              |
| ११५ | कालक्रमाद्    | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा  |
|     | नाद्याप्यपैति | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा  |
|     | प्रातः प्रिया | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा  |
|     | देवेन         | ॥                | उत्प्रेक्षा  |
| ११७ | स्वलेकिापि    | शाईलबिक्रीडितम्  | उपमा         |
| ११८ | किं शितैः     | ॥                | उपमा         |
|     | द्योतस्तां    | ॥                | उपमा         |
|     | तत्रैव        | अनुष्टुप्        | उत्प्रेक्षा  |
|     | तदत्र         | वशस्य            | उपमा         |

|     |                 |                  |                      |
|-----|-----------------|------------------|----------------------|
| १२१ | सम्प्राप्तः     | शादूलविक्रीडितम् | विरोध                |
|     | यस्मिन्नुपद्रु  | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा          |
| १२२ | भूभूमिं         | सुगंधरा          | पयोधोक्त             |
| १२३ | एतस्मिन्नालिनी. | शादूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा          |
|     | चक्राह्व.       | वसन्ततिलका       | उत्प्रेक्षा          |
|     | एष प्रभूतः      | वसन्ततिलका       | आपह्नुति             |
|     | क्रीडावने       | इन्द्रजाल        | उपमा                 |
|     | चन्दनाचल        | इन्द्रजाल        | उपमा                 |
| १२७ | बालरवि.         | आर्षा            | उपमा                 |
|     | उत्क्षेपण.      | वसन्ततिलका       | अनुप्रास             |
| १३० | उद्गेलन         | शादूलविक्रीडितम् | उपमा                 |
|     | पूगी चतुर्थ     | अनुप्रास         | उत्प्रेक्षा          |
|     | व्याघ्र-ह्व.    | शादूलविक्रीडितम् | आपह्नुति उत्प्रेक्षा |
| १३३ | निक्षिप्तः      | उपजाति           | उत्प्रेक्षा          |
|     | सा श्रीरियं     | वसन्ततिलका       | आपह्नुति             |
|     | मत्स्योत्पीन    | शादूलविक्रीडितम् | उत्प्रेक्षा          |

|               |                  |                    |                   |
|---------------|------------------|--------------------|-------------------|
| १३७           | अत्रान्तरे       | वसन्ततिलका         | उपमा              |
|               | तस्याः सौष्ठवः   | अनुष्टुप्          | पद्योद्योक्त      |
|               | सा तस्य          | वसन्ततिलका         | उत्प्रेक्षा-रूपम् |
|               | ततस्तयोः         | वंशस्थ             | उत्प्रेक्षा       |
| १३८           | मुद्यन्          | वंशस्थ             | उपमा              |
|               | तदनु             | मालिनी             | अनुप्रास          |
| अष्टमोऽध्यायः |                  |                    |                   |
| १३९           | अथ स             | मालिनी             | —                 |
| १४०           | विमेलनिर्मुक्तं  | शिरवरीणी           | संशन्देह          |
| १४१           | स्वच्छेन्द्रनीलः | वसन्ततिलका         | उत्प्रेक्षा       |
|               | अस्या गुणैः      | ॥                  | उत्प्रेक्षा       |
|               | रूपेण नृपः       | ॥                  | अपह्नुति          |
| १४४           | स्वामिन्नेव      | शार्दूलविक्रीडितम् | विशेष             |
|               | हृद्भूमिगवने     | ॥                  | उत्प्रेक्षा       |
| १४७           | कौसुमैः          | ॥                  | —                 |
|               | दिव्यैरावरणैः    | ॥                  | संशन्देह          |

|     |                |                    |                  |
|-----|----------------|--------------------|------------------|
| ११६ | उपेक्षाञ्चरे   | वसन्ततिलका         | —                |
| —   | सावेत्राङ्गेषु | सुगंधरा            | उपाति            |
| —   | कनकलिनी        | दुर्लभिलिखितम्     | उपाति - उपलुति   |
| ११७ | ब्रह्मस्त्वां  | अनुपुष्प           | रूपक             |
| ११८ | उलपयति         | हरिणी              | उपाति            |
| —   | शुद्धाष्टादश   | शार्दूलविक्रीडितम् | उपाति - उपलुति   |
| —   | क्षीरं दादा    | वसन्ततिलका         | उपाति - उपलुति   |
| ११९ | पुनःपुनः       | उपजाति             | उपाति - उपलुति   |
| —   | आशीर्वादम्     | इन्द्रजित्         | रूपक - विरोध     |
| —   | आशी            | इन्द्रजित्         | रूपक             |
| —   | हस्तोलेखितः    | उपजाति             | रूपक             |
| —   | दादाः कवीनां   | इन्द्रजित्         | श्लेष - व्यतिरेक |
| —   | आरम्भशब्द      | उपजाति             | उपाति            |
| १२० | कविगुणाढ्यः    | उपजाति             | उपाति            |
| —   | सर्वज्ञः       | उपजाति             | रूपक             |
| —   | व्यक्तः        | इन्द्रजित्         | रूपक - उपलुति    |

|                   |                  |              |
|-------------------|------------------|--------------|
| भाणः कवीनां.      | उपजाति           | रूपक         |
| मान्यो जगत्यां    | "                | रूपक         |
| शामन्ति जन्मा.    | "                | विरोध        |
| वन्द्याः स        | "                | रूपक         |
| आयावरः            | "                | उपमा         |
| बभूवुरन्ये.       | "                | रूपक         |
| तस्मिन्नुवंशे     | इन्द्रवज्रा      | स्तिष - रूपक |
| यो वासायजेन       | "                | उपमा-रत्नेष  |
| जडेन तेन          | उपजाति           | —            |
| सा-द्यान्न        | "                | —            |
| करिष्यते किं      | "                | —            |
| दृष्टेऽपि         | "                | उपमा         |
| १५५ साधुर्जयत्या. | "                | एकावलि       |
| १५७ वागीधरं.      | "                | —            |
| वृत्तेभ्यः किल    | शादूलविक्रीडितम् | —            |
| ये तावत्          | "                | —            |

|     |                   |                  |      |
|-----|-------------------|------------------|------|
|     | ...कौशिकप्रायेतो  | वसन्ततिलका       |      |
| १५८ | ...सि जन्मन्तु ते | शाद्लविज्जोडितम् | रूपक |
|     | अपि जयति          | तालिनी           |      |